शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 160-164
DOI :-10.71037/Shodhaamrit.v3i2.25
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :
मौसमी सिंह तिवारी
शोधार्थी, हिन्दी केन्द्रीय विभाग,
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमान्डू, नेपाल.

Corresponding Author :
मौसमी सिंह तिवारी
शोधार्थी, हिन्दी केन्द्रीय विभाग,
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमान्डू, नेपाल.

विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला के उपन्यासों में पितृसत्तात्मक समाज का चित्रण

शोध–सार : प्रस्तुत शोध का उद्देश्य विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला के उपन्यासों में अभिव्यक्त पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना तथा उसके प्रभावों का विश्लेषण करना है। पितृसत्ता ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जिसमें परिवार, समाज, समुदाय तथा राज्य की संरचनाएँ पुरुष–प्रधान मूल्यों, मान्यताओं और परंपराओं द्वारा संचालित होती हैं। इस व्यवस्था में पुरुष को सत्ता, निर्णय, संपत्ति तथा सामाजिक प्रतिष्ठा का केंद्र माना जाता है, जबकि महिलाओं को अधीनस्थ भूमिका में सीमित कर दिया जाता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था केवल पुरुषों द्वारा ही नहीं, बल्कि सामाजिक संस्कारों के प्रभाव से महिलाओं द्वारा भी संरक्षित और पुनरुत्पादित की जाती है।

अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि कोइराला के उपन्यासों में स्त्री–पुरुष संबंध, पारिवारिक संरचना, सामाजिक मान्यताएँ तथा लैंगिक विभेद किस प्रकार चित्रित हुए हैं। कोइराला ने अपने उपन्यासों में ऐसे समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है जहाँ संपत्ति, वंश परंपरा, निर्णय लेने का अधिकार तथा सामाजिक नियंत्रण पुरुषों के हाथों में केंद्रित हैं। महिलाओं को घरेलू कार्यों, मातृत्व तथा प्रजनन संबंधी भूमिकाओं तक सीमित कर दिया जाता है और उनकी स्वतंत्र इच्छा, आकांक्षाओं तथा व्यक्तित्व को सामाजिक मर्यादाओं के भीतर बाँधने का प्रयास किया जाता है।

शोध पद्धति : यह शोध आलेख गुणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि कोइराला के उपन्यासों में पितृसत्तात्मक व्यवस्था केवल सामाजिक यथार्थ के रूप में उपस्थित नहीं है, बल्कि उसके कारण उत्पन्न शोषण, असमानता, मानसिक द्वंद्व, स्त्री–अस्मिता तथा मुक्ति–चेतना को भी प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। उनके स्त्री पात्र परंपरागत बंधनों से संघर्ष करते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान और अस्तित्व की खोज करते दिखाई देते हैं। इस प्रकार कोइराला के उपन्यास पितृसत्तात्मक समाज की संरचना, उसकी जटिलताओं तथा उससे उत्पन्न लैंगिक असमानताओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज सिद्ध होते हैं। यह अध्ययन निष्कर्ष रूप

में स्थापित करता है कि कोइराला ने अपने उपन्यासों के माध्यम से पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था का यथार्थवादी चित्रण करते हुए स्त्री चेतना और समानता के प्रश्नों को प्रमुखता से उठाया है।

शब्द कुंजी : पितृसत्तात्मक व्यवस्था, स्त्री अस्मिता, मानसिक द्वंद्व, मुक्ति चेतना।

विषय प्रवेश : वर्तमान सामाजिक संरचना में समाज, परिवार, समुदाय और राज्य पितृसत्ता द्वारा निर्मित मूल्यों और परंपराओं पर चल रहे हैं। पितृसत्तात्मक संरचना पुरुषों की वंश परंपराओं पर आधारित होता है, महिलाएं पुरुषों के निर्देशों, आदेशों, आदर्शों और मार्गदर्शन का पालन करती हैं। यानी महिलाओं को पुरुषों की अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जाता है। पितृसत्ता केवल पुरुषों द्वारा ही नहीं बल्कि महिलाओं द्वारा भी चलाई जाती है। एक महिला के लिए पितृसत्तात्मक मूल्यों का पालन करना पितृसत्तात्मक सोच को बढ़ावा देना है। घर की वंशावली, हिस्सेदारी, निर्णय लेने और नियंत्रण का अधिकार पुरुषों में निहित होता है। यह परंपरा दादा, पिता, पुत्र, पोते, परपोते तक चली आ रही है। घर की संपत्ति में मां, पत्नी, बेटी और पोती का कोई अधिकार नहीं होता है। जब घर में कोई भी निर्णय लेने की बात आती है तो पुरुष का निर्णय सर्वोपरि माना जाता है।

पितृसत्ता का शाब्दिक और लाक्षणिक अर्थ ही है सामाजिक संरचना में पिता अर्थात पुरुष का वर्चस्व होना। यह एक ऐसा शब्द है जो शक्ति या प्रभुत्व का बोध कराता है। पितृसत्ता पारंपरिक रूप से विकसित होती है, निर्धारित करती है और गतिविधि स्थापित होने के बाद निर्णायक लिंग वर्ग, जो सत्ता के केंद्र में होता है, सत्ता के रूप में स्थापित हो जाता है। पुरुषों की सर्वोच्चता स्थापित होने के बाद लिंग–केंद्रित व्यवस्था के रूप में पितृसत्ता का जन्म हुआ। पितृसत्ता न केवल पुरुष प्रभुत्व स्थापित करने वाला शब्द है, बल्कि यह भी स्थापित करता है कि परिवार में किसका वर्चस्व है। यह शोषण को संस्थागत बनाने की विचारधारा है। पितृसत्ता, एक ऐसी संस्था के रूप में जो पुरुष वर्चस्व की स्थापना के लिए बाध्यकारी और बाध्यकारी नियम बनाती है, सामाजिक संरचना की प्रत्येक इकाई में इसका स्थान है। महिलाओं का आर्थिक शोषण, विभिन्न प्रकार के सामाजिक भेदभाव, भेदभाव एवं नियंत्रण, हिंसा, अनादर, उत्पीड़न आदि पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना की विशेषताएं हैं ।

सामाजिक संरचना में प्रभुत्व और अधीनता के बीच संघर्ष में स्त्री का स्वभाव और उसका स्वरूप पितृसत्ता, महिला मुक्ति और महिलाएँ, जो सांस्कृतिक रूप से उन्हें जैविक भूमिकाओं के आधार पर पूरा करने के लिए बांधती हैं। महिलाएं घरेलू भूमिकाओं और प्रजनन तक ही सीमित हैं। महिलाओं की भूमिका सामाजिक संरचनाओं के लिए उत्पादक के तौर पर मान्य है क्योंकि वे केवल इस प्रक्रिया के लिए पुरुषों की साथी हैं। लैंगिक भूमिकाओं के साथ–साथ सांस्कृतिक प्रथाओं के संदर्भ में पितृसत्ता महिलाओं को अधीनस्थ मानती है। अर्थात् जहाँ पितृसत्ता है वहाँ स्वाभाविक रूप से लैंगिक विभेद विद्यमान रहता है। विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला के उपन्यासों में जगह–जगह पर पितृसत्तात्मक समाज की झलक मिलती है।

'तीन घुम्ती' में इन्द्रमाया के विवाह का समय आता है तो वहाँ उसके माता पिता उसके लिए वर खोजना शुरु करते हैं। काठमांडू में पली–बढ़ी एक कुलीन नेवार परिवार की बेटी इंद्रमाया पहाड़ी बाहुन से प्यार करती है और उससे ही शादी करना चाहती है। लेकिन यहाँ परिवार में उसका विरोध होता है, "माता पिता को प्राप्त अधिकार के अनुसार युवती कन्या के हठ को सामाजिक नियम और मर्यादा के वश में रखने के उद्देश्य से उसके बाहर जाने के रास्ते बंद कर दिए गए ।"(हाम्रो पुरुषार्थ मासिक, पृष्ठ–285)

इन्द्रमाया को समाज और परिवार का वास्ता दिया जाता है। उसे कहा जाता है कि हम राजा के आदमी हैं, हमारा समाज और दरबार से पुराना रिश्ता है लेकिन पीताम्बर का दरबार के प्रति अच्छी सोच नहीं है इसलिए तुम्हारा विवाह उसके साथ सही नहीं है। किन्तु परिवार की इच्छा के विरुद्ध इंद्रमाया अपना पैतृक घर छोड़ देती है और पीताम्बर के साथ वैवाहिक जीवन शुरु करती है। यह उपन्यास इस विचार का समर्थन करता है कि एक महिला को अपनी पसंद के व्यक्ति से शादी करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए। किन्तु यहाँ एक बात इन्द्रमाया के पक्ष में सही नहीं है। वह पीताम्बर से शादी करने के बाद अपनी शिक्षा को पूरी नहीं कर पाती है। पीताम्बर के यहाँ भी पुरुषवादी सोच उस पर हावी रहता है। शादी होते ही वह नेपाली परंपरा के अनुसार गृहिणी बन गई। और

उसका स्वयं का व्यक्तित्व कहीं अदृश्य हो जाता है। इतना ही नहीं उसे पति की इच्छा के अनुरुप उसके दोस्तों की खातिरदारी करनी पड़ती है। क्योंकि अगर वह ऐसा नहीं करती तो पीताम्बर नाराज हो जाता। शादी करने के बाद उसे अलग–अलग परंपराओं में ढलने के लिए खुद को माहौल के मुताबिक ढालना पड़ता है। "रमेश उसके सामने पीताम्बर की महिला मित्रों की हमेशा चर्चा किया करता था। कौन नारी होगी जो अपने पति की इस बात से अनभिज्ञ होगी ।"(कोइराला, 2068,पृ.19)

जिस क्षण से एक महिला अपने पति के घर में कदम रखती है, उसे हर पहलू में सतर्क रहना पड़ता है। पुरुष अगर घर में कोई नया मेहमान आता है वह उसके साथ संवाद करता है और ऊर्जा प्राप्त करता है, लेकिन महिला को उसके भोजन की व्यवस्था करनी होती है। ऐसा माना जाता है कि जो महिला कड़ी मेहनत करती है और सबका दिल जीत लेती है वह एक आदर्श महिला होती है। स्त्री और पुरुष के लिए दो भिन्न अवधारणा समाज में व्याप्त है। जहाँ पुरुष–प्रधान समाज द्वारा बनाए गए यौन नैतिकता के मानक पुरुषों के लिए बहुत कमजोर हैं, वहीं स्त्रियों के लिए बहुत सख्त हैं। यदि पत्नी बांझ है, तो पति के पास फिर से शादी करने का अवसर है, लेकिन यदि पति बांझ है, तो महिला को परेशानी का सामना करना पड़ता है। इन्द्रमाया माँ बनना चाहती है और जब यह इच्छा वह पीताम्बर के पास प्रकट करती है तो पीताम्बर उस पर बांझ होने का आरोप लगा देता है। यहाँ लैंगिक विभेद स्पष्ट तौर पर दिखता है। आज भी समाज में यही स्थिति व्याप्त है। पति कभी भी अपनी कमजोरी स्वीकार नहीं करता बल्कि उसे हर हाल में पत्नी में ही कमी नजर आती है। इतना ही नहीं परिवार और समाज भी स्त्री में ही कमी देखता है। यहाँ वैचारिक बहस के लिए इस उपन्यास ने नैतिक मानकों का एक नया पहलू हमारे सामने पेश किया है। इस उपन्यास ने न केवल उपन्यासकार कोइराला की सोच बल्कि उनकी बौद्धिक तार्किकता को भी प्रकट किया है।

पीताम्बर से अलग होने के बाद इन्द्रमाया स्वतंत्र हो जाती है। देखा जाए तो इन्द्रमाया अपने वैवाहिक जीवन शुरु से ही तनावग्रस्त है। पहले तो बांझ का आरोप और फिर सतीत्व का सवाल उसे समाज के कटघरे में खड़ा कर देता है। किन्तु इन्द्रमाया स्पष्ट घोषणा करती है कि मेरी पवित्रता मेरा सवाल है। मैं अपने जीवन में वफादारी और ईमानदारी को महत्तव देती हूँ। "मेरा सतीत्व तुम्हारे सोचने का विषय नहीं है। यह मेरा विषय है। मेरी आस्था के साथ सम्बन्धित है। मैं सती या असती जो भी हूँ यह निर्णय मैं स्वयं करुँगी।" (कोइराला,2068,पृ.63)

मातृत्व महिलाओं के अधिकार का मामला है। इंद्रमाया ने समाज की उस पारंपरिक मान्यता को तोड़ दिया है, 'जीवन के मूल तत्वों का पोषण करके मैंने अपनी आंतरिक निष्ठा, आध्यात्मिक कर्तव्य को अक्षुण्ण रखा है।' (कोइराला, 2068,पृ.63)

वह पीताम्बर के साथ रहना चाहती थी, लेकिन उसे घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि पीताम्बर पुरुष सत्तावाद से पीड़ित था। वह इन्द्रमाया को उसकी बेटी के साथ स्वीकार नहीं करना चाहता था। उसकी शर्त थी कि इन्द्रमाया बेटी को छोड़ दे तो वह उसे अपना लेगा। यह सोच पूरी तरह पुरुषवादी सोच है। किन्तु यहाँ इन्द्रमाया का मजबूत पक्ष उभर कर सामने आता है। पत्नी पर मातृत्व का पलड़ा भारी हो जाता है। पीताम्बर से नाता तोड़ने के बाद, इंद्रमाया एक हाशिए का पात्र बन जाती है। वह समाज की नजरों में भाग्यशाली होती अगर उसने अपनी बहन की तरह यथास्थिति वाले परिवार में शादी करने की कोशिश की होती। वह एक मध्यमवर्गीय परिवार में पली–बढ़ी, वह बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम थी और घर छोड़ने के बाद भी वह अपने पैरों पर खड़ी होने और अपनी बेटी को अच्छी शिक्षा देने में सक्षम थी। वह एक ऐसे चरित्र का प्रतिनिधि है जो खुद को बदलती है।

तीन घुम्ती में कई जगह पितृसत्तात्मक सोच सामने आती है। उपन्यास में पीताम्बर और उसके साथी को राजनीतिक दृष्टि से विद्रोही के रुप में देखा गया है, किन्तु वे महिलाओं के संदर्भ में यथास्थिति के समर्थक हैं। पीतांबरा और उनके दोस्त विद्रोही राजनीतिक दल के नेता हैं, लेकिन महिलाओं को हराने के बारे में उनका

नजरिया परंपरागत समाज जैसा ही है। महिलाओं को चाय परोसने की भूमिका सौंपी गई है। महिलाओं के बच्चे पैदा करने के अधिकार पर उनका विचार पारंपरिक है। इन्द्रमाया की भूमिका पीताम्बरा को लुभाने तक सीमित है, वह एक शोषित चरित्र है। उपन्यास में यह स्पष्ट किया गया है कि पुरुष महिलाओं को उपभोग्य वस्तुओं के रूप में देखते रहे हैं। पीताम्बर के जेल जाने के बाद जब रमेश इन्द्रमाया के पास आता है तो वह भी उसे भोगना ही चाहता है। वह उसे आकर्षित करने के लिए उस पर पैसे खर्च ककरता है। किन्तु इन्द्रमाया के गर्भवती होने के बाद उसका व्यवहार बदल जाता है और उसका अवसरवादी स्वभाव स्पष्ट हो जाता है। मायके में भी में भी इंद्रमाया अपनी मां से बात कर सकती थी लेकिन अपने पिता से नहीं। इस उपन्यास के सभी पुरुष पात्र महिलाओं को नौकर के रूप में देखते हैं क्योंकि घर का काम करना और पति को खुश करना उसकी जिम्मेदारी है। जैसा कि मार्क्सवादी नारीवादी कहते हैं, समाज में न केवल नारी वर्गीय शोषण है बल्कि लैंगिक शोषण भी भयानक है।

सुम्निमा एक प्रतीकात्मक उपन्यास है। स्वयं उपन्यासकार भी सुम्निमा को प्रतीकात्मक उपन्यास मानते हैं। उपन्यासकार का यह उपन्यास काफी विवादित रहा है। किरातियों द्वारा सुम्निमा को आराध्य देवी माना जाता है। उपन्यास में उन्हें एक नग्न व्यक्ति के रुप में प्रस्तुत करने को कुछ विश्लेषक सांस्कृतिक अपराध के रूप में देखते हैं। इसी प्रकार सोमदत्त को पाखंडी और उपहास करने वाले पात्र के रुप में प्रस्तुत करने को भी कुछ विश्लेषकों ने ब्राह्मण संस्कृति का खुला उपहास माना है। इस उपन्यास को कई आरोपों का सामना करना पड़ा है। मुख्य आरोप यह रहा है कि उपन्यास में किराती देवी को नग्न दिखाया गया है और ब्राह्मण संस्कृति का बढ़ा–चढ़ाकर मजाक उड़ाया गया है।

लेखक ने दो विपरीत समाज से पात्र को चुना है। ये दोनों ही पात्र अलग दृष्टिकोण, खान–पान, रहन–सहन से आते हैं। वीपी के पात्र इस उपन्यास में समाज से अधिक संस्कार से लड़ते नजर आते हैं। इसलिए उपन्यास में दिखाए गए परिवेश में पितृसत्तात्मकता का चित्रण नहीं मिलता है। सुम्निमा भील–पुत्री है। नेपाल में स्वयं को आदिवासी समुदाय का कहने वाले का प्रतिनिधित्व सुम्निमा ने किया है। सुम्निमा केवल किराती समुदाय की ही नहीं अनार्यों की भी प्रतिनिधि है। उपन्यास में दो भिन्न संस्कृतियों का सम्मान और सौहार्दता पर विशेष बल दिया गया है।

पुत्र को पिता के आदेश का पालन करते हुए दिखाया गया है। उसी तरह सुम्निमा भी अपने पिता की आज्ञा का पालन करती है और विवाहित होते हुए भी सोमदत्त के साथ समय व्यतीत करती है। परन्तु सुम्निमा का चरित्र कहीं भी पीड़ित या शोषित नहीं है। वह एक मजबूत इरादे वाली नारी है।

सुम्निमा में सुम्निमा जहाँ मजबूत इरादे की स्त्री है वहीं पुलोमा कमजोर इरादे वाली स्त्री है। सुम्निमा अपने निर्णय स्वयं लेती है और सोमदत्त के सामने अपनी बात भी मजबूती से रखती है। इसके विपरीत पुलोमा की शादी सिर्फ इसलिए होती है कि उसे वंश बढ़ाने के लिए पुत्र को जन्म देना है। सोमदत्त अपने विवाह के लिए जरा भी उत्सुक नहीं है। जब उसकी मुलाकात पुलोमा से होती है तब वह उसी अनाग्रह और उदासीनता के भाव से कहता है कि, "जीव और आत्मा का द्वेतभाव केवल परमात्मा में जाकर लुप्त होता है।"(कोइराला, 2068,पृ.317) पुलोमा भी उसका समर्थन करती हुई कहती है कि, "भेद दृष्टि अज्ञान दृष्टि है ।"(कोइराला, 2068,पृ.317)

पितृसत्तात्मकता की कसौटी पर मोदिआइन उपन्यास भी नहीं आता है। क्योंकि इसकी कहानी भी अध्यात्म और पौराणिकता से ली गई है। जहाँ का समाज आज के समाज से बिल्कुल अलग है। महाभारत के युद्ध और उसके बाद की परिस्थितियों को लेकर गढ़ा गया यह उपन्यास एक अलग ही परिवेश का दृश्य पाठक के सामने लाता है। पौराणिककाल की महाभारत की घटना का उपजीव्य साधन ही इस उपन्यास की कथावस्तु है। विशाल कथा को लघु आयाम में प्रस्तुत करने की कोइराला जी की कला इस उपन्यास में स्पष्ट दिखाई पड़ती है। इस उपन्यास में उपन्यासकार स्वयं के मिसिरजी के साथ बालहठ के रूप में बाल्यकाल में किए गए यात्रा का संस्मरण के रूप में प्रयोग करते हैं। उपन्यास की कथा 'म' पात्र का दरभंगा यात्रा में मोदिआईन से मुलाकात, वहां का परिवेश तथा मोदिआइन द्वारा रात्रि के समय कही गयी दन्त्यकथा मात्र है। विशेषकर कौरव और पाण्डव के

बंटवारे से उत्पन्न समस्या युद्ध में परिणत होने की नौबत का सचित्र वर्णन है। मनुष्य देवता भी नहीं है और पशु भी नहीं है। अतः मनुष्य को मनुष्य बनकर ही रहना चाहिए, वरना मानव संहार जैसा अमानवीय कर्म से मानव अस्तित्त्व संकट में पड़ने के कारण महाभारत का युद्ध शान्ति और मानवता के निमित्त है, यही निष्कर्ष इस उपन्यास का है। बड़ा आदमी नहीं, असल आदमी बनना इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है ।

निष्कर्ष : विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला के उपन्यासों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उनकी रचनाओं में समाज, संस्कृति, मनोविज्ञान तथा मानवीय संबंधों के विविध आयाम अभिव्यक्त हुए हैं। पितृसत्तात्मकता के संदर्भ में उनके सभी उपन्यासों का स्वर एक समान नहीं है, बल्कि प्रत्येक उपन्यास अपने विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक तथा वैचारिक परिवेश के अनुरूप स्त्री–पुरुष संबंधों को प्रस्तुत करता है।

'तीन घुम्ती' में पितृसत्तात्मक समाज का सबसे सशक्त और प्रत्यक्ष चित्रण मिलता है। उपन्यास के पुरुष पात्र राजनीतिक रूप से प्रगतिशील और विद्रोही दिखाई देते हैं, किन्तु स्त्रियों के प्रति उनका दृष्टिकोण परंपरागत और पुरुषवादी है। पीताम्बर तथा उसके साथी महिलाओं को समान अधिकारयुक्त व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि सेवा, उपभोग और पारिवारिक दायित्वों तक सीमित प्राणी के रूप में देखते हैं। इन्द्रमाया का चरित्र स्त्री के दोहरे शोषण—सामाजिक तथा लैंगिक—का प्रतिनिधित्व करता है। उसके साथ पुरुष पात्रों का व्यवहार यह प्रमाणित करता है कि पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को स्वतंत्र व्यक्तित्व के बजाय पुरुष की आवश्यकता और इच्छा की पूर्ति के साधन के रूप में देखा जाता है। इस दृष्टि से 'तीन घुम्ती' पितृसत्तात्मक संरचना की विसंगतियों और स्त्री–शोषण को उजागर करने वाला महत्वपूर्ण उपन्यास है।

इसके विपरीत 'सुम्निमा' में पितृसत्तात्मकता मुख्य विषय के रूप में उपस्थित नहीं है। यह उपन्यास दो भिन्न संस्कृतियों—आर्य और किरात—के बीच वैचारिक संघर्ष, सहअस्तित्व और सांस्कृतिक संवाद को केंद्र में रखता है। सुम्निमा का चरित्र आत्मनिर्भर, साहसी और निर्णयक्षम स्त्री का प्रतीक है, जो अपनी बात निर्भीकता से रखती है तथा किसी भी प्रकार की हीनता या दासता का अनुभव नहीं करती। यद्यपि पुलोमा के चरित्र में स्त्री की पारंपरिक भूमिका और वंशवृद्धि की अपेक्षा दिखाई देती है, फिर भी उपन्यास का समग्र स्वर स्त्री को केवल शोषित रूप में प्रस्तुत नहीं करता। यहाँ स्त्री की स्वतंत्र चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता को भी महत्त्व दिया गया है।

इसी प्रकार 'मोदिआइन' में भी पितृसत्तात्मकता का प्रत्यक्ष चित्रण नहीं मिलता, क्योंकि इसकी कथावस्तु पौराणिक और आध्यात्मिक संदर्भों से निर्मित है। महाभारत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह उपन्यास मानवता, नैतिकता, युद्ध और शांति जैसे सार्वभौमिक प्रश्नों को केंद्र में रखता है। इसका उद्देश्य स्त्री–पुरुष संबंधों की सामाजिक संरचना का विश्लेषण करना नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों की स्थापना करना है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला के उपन्यासों में पितृसत्तात्मकता का स्वरूप विविध रूपों में उपस्थित है। 'तीन घुम्ती' में यह सामाजिक यथार्थ और स्त्री–शोषण के रूप में तीव्रता से उभरती है, जबकि 'सुम्निमा' और 'मोदिआइन' में मानवीय, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक प्रश्न अधिक प्रमुख हैं। फिर भी कोइराला के स्त्री पात्र केवल निष्क्रिय या पीड़ित नहीं हैं; उनमें आत्मचेतना, संघर्षशीलता और स्वतंत्र व्यक्तित्व के गुण भी विद्यमान हैं। यही विशेषता उनके उपन्यासों को स्त्री–अनुभूति और सामाजिक यथार्थ के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती है।

संदर्भ सूची :

1. कोइराला विश्वेश्वरप्रसाद, 2068 वि.(तीन घुम्ती) वीपी का उपन्यास, साझा प्रकाशन, पृष्ठ–19
2. कोइराला विश्वेश्वरप्रसाद, (तीन घुम्ती) वीपी का उपन्यास, साझा प्रकाशन, पृष्ठ–7
3. कोइराला विश्वेश्वरप्रसाद, (तीन घुम्ती) वीपी का उपन्यास, साझा प्रकाशन, पृष्ठ–63
4. कोइराला विश्वेश्वरप्रसाद, (तीन घुम्ती) वीपी का उपन्यास, साझा प्रकाशन, पृष्ठ–63
5. कोइराला विश्वेश्वरप्रसाद, (सुम्निमा) वीपी का उपन्यास, साझा प्रकाशन, पृष्ठ–317
6. कोइराला विश्वेश्वरप्रसाद, (सुम्निमा) वीपी का उपन्यास, साझा प्रकाशन, पृष्ठ–317